P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आजमगढ़ जनपद (उत्तर प्रदेश) में ग्रामीण औद्योगीकरण का स्तर : एक भौगोलिक अध्ययन

देवेन्द्र कुमार चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
रामजी सहाय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रूद्रपुर,
देवरिया, उ.प्र., भारत

सुनील कुमार प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोल विभाग,
बापू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
पीपीगंज, गोरखपुर,
(उ.प्र.) भारत

सारांश

ग्रामीण उद्योगों के वितरण के पश्चात ग्रामीण औद्योगीकरण के स्तर को ज्ञात किया गया है। इसके लिए सर्वप्रथम कृषि एवं प्राथमिक संसाधनों पर आधारित औद्योगिक विकास स्तर को प्राप्त करने के लिए 14 चरों का चयन करके कृषि विकास स्तर को ज्ञात किया गया है। पुनः विकासखण्डवार कृषि और प्राथमिक संसाधनों पर आधारित उद्योगों की संख्या के अनुसार कोटि क्रम प्रदान करके ग्रामीण औद्योगीकरण के स्तर को भी ज्ञात किया गया है। कृषि विकास स्तर के क्षेत्रीय प्रतिरूप और ग्रामीण औद्योगीकरण के स्तर की तुलना करते हुए ग्रामीण औद्योगीकरण के क्षेत्रीय प्रतिरूप का विश्लेषण किया गया है। कृषि विकास स्तर के अनुसार सर्वाधिक कृषि विकास बिलरियागंज, आजमगढ़, पल्हनी, जहानागंज, लालगंज, मेहनगर, तरवा में है। इन विकास खण्डों में औसत से अधिक कृषि विकास मिलता है। जबकि उत्तरी, मध्यवर्ती और मध्य पश्चिमी भाग में कृषि विकास स्तर अपेक्षाकृत निम्न है। कृषि पर आधारित औद्योगीकरण स्तर के अनुरूप ठेकमा, पल्हनी, मेहनगर तथा बिलरियागंज में सर्वाधिक कृषि उद्योग है। रानी की सराय, मिर्जापुर, अहिरौला में भी कृषि उद्योग विकसित है। लेकिन उनकी संख्या कम है। इस तरह कृषि औद्योगीकरण का उच्च स्तर मेहनगर, पल्हनी, ठेकमा और बिलरियागंज में है। मध्यम स्तर मिर्जापुर, हरैया, महराजगंज, अजमतगढ़ में है तथा शेष में निम्न स्तर का है।

मुख्य शब्द : अपेक्षाकृत कमपूंजी, परम्परागत तकनीक, जजमानी अर्थतन्त्र , खाड़सारी उद्योग, हथकरघा उद्योग, कच्चा माल, पुनर्चक्रण, गुणात्मक और मात्रात्मक विधियाँ, हस्तशिल्प, प्रसंस्करण उद्योग, उद्योगों के पिछड़ेपन के कारण आदि ।

प्रस्तावना

संकल्पनात्मक रूप में यह स्पष्ट है कि ग्रामीण उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित किये जाने वाले ऐसे उद्योग हैं, जो अपेक्षाकृत कमपूंजी, परम्परागत तकनीकी और स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता तथा स्थानीय आवश्यकता के अनुसार संचालित होते हैं।[1] विभिन्न क्षेत्रों के सन्दर्भ में यह अध्ययन किया गया है कि औद्योगीकरण की प्रक्रिया में ग्रामीण उद्योग ही प्राथमिक उद्योग रहे हैं।[2]

चूंकि मानव समाज को अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्राथमिक कार्यों के अतिरिक्त द्वितीयक और तृतीयक कार्यों की आवश्यकता पड़ती है। इसी कारण मनुष्य ने परम्परागत रूप में अधिकतर स्वालम्बन की दशा में द्वितीयक कार्यों का विकास किया और लोग इस कार्य को पीढ़ी दर पीढ़ी सम्पादित करने लगे। उनका एक जातीय वर्ग बन गया। जजमानी अर्थ तन्त्र के अनुसार कृषि उत्पादित तिलहन पदार्थों पर आधारित उद्योग तेली समुदाय द्वारा संचालित किया गया। और आज भी इस समुदाय के कुछ लोग पारिवारिक आधार पर इसको संचालित करते हैं। इसी प्रकार वैश्य जाति के लोग गुण पर आधारित खाड़सारी उद्योग, मुस्लिम जाति के लोग हथकरघा उद्योग आदि संचालित करने लगे। ब्रिटिश काल में नई तकनीक और पूंजी के प्रवाह के कारण दूसरे ग्रामीण उद्योग भी विकसित होते गये। जैसे कृषि संसाधनों पर आधारित छोटे–छोटे उद्योग कारखानों के रूप में विकसित हुए। और परिवहन मार्ग जाल के विकसित होने पर इन उद्योगों का क्षेत्रीय सम्पर्क भी बढ़ा और उत्पादन के आकार तथा व्यापार के दृष्टिकोण से इन उद्योगों का विस्तार हुआ। ब्रिटिश काल के अन्त से ही आवश्यकता पर आधारित अन्य प्रकार के उद्योगों का तेजी से विकास हुआ।[3] तथा स्थानीय और कुशल श्रम की उपलब्धता के कारण आवश्यकता वाले उद्योग तीव्रगति से विकसित होते गये। इन उद्योगों का कच्चामाल विभिन्न पदार्थों के पुनर्चक्रण और बाहरी क्षेत्रों के आयात के रूप में

मंगाया जाता है।[4] आज भी ऐसे उद्योगों की क्षेत्र में मांग अधिक है और अधिकतर आयात करके पूरी की जाती है। इस तरह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण उद्योगों में दो प्रमुख आयाम हैं–कृषि और प्राथमिक संसाधनों पर आधारित उद्योग।

1. कृष्येत्तर संसाधनों पर आधारित उद्योग।

उपरोक्त दोनों आयामों के अन्तर्गत प्रस्तुत अध्याय में कृषि पर आधारित उद्योग और कृष्येत्तर उद्योग का भौगोलिक विश्लेषण करने के लिए विभिन्न प्रकार के उद्योगों, उनके केन्द्रों के विकासखण्डवार वितरण के आधार पर उनका स्तर ज्ञात करके अन्त में दोनों को मिला करके सम्बन्धित ग्रामीण औद्योगीकरण का स्तर ज्ञात किया गया है। इसके लिए सूचनाएं और आकड़े जिला संख्याधिकारी कार्यालय और उद्योग निदेशालय कानपुर से प्राप्त किये गये हैं। विभिन्न गुणात्मक और मात्रात्मक विधियों का प्रयोग करके औद्योगिक रूप के स्तर की गणना करके उनका मानचित्रण किया गया है, जिसका विश्लेषण निम्नलिखित है–

कृषि आधारित औद्योगीकरण का स्तर

कृषि आधारित औद्योगिकरण के स्तर से तात्पर्य कृषि संसाधनों को कच्चे माल के रूप में उपयोग करने वाले उद्योगों की विकास प्रक्रिया और क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप से है।[5] उद्योग उन उद्यमों का समूह है जो समान आर्थिक वस्तुएं अथव जीवनोपयोगी सेवाएं उत्पन्न करता है।[6] संक्षेप में उद्योग प्राथमिक कार्यों से पदार्थ लेकर उनको संसाधित करते हैं तथा तृतीयक व चतुर्थक क्रियाओं से सहयोग लेकर विविध प्रकार के उत्पादों को उत्पन्न करते हैं। जिसका उपयोग मानव अपने कार्यों में करता है।[7] शाब्दिक रूप में उद्योग किसी भी व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध कार्य को कहते हैं। अधिकांश विद्वान इसी अर्थ में प्रयोग करते हुए मानव द्वारा किये जाने वाले सभी आर्थिक क्रियाकलापों जैसे आखेट, मछली पकड़ना, कृषि, पशुपालन, उत्खनन, व्यापार, परिवहन आदि को इसके अन्तर्गत सम्मिलित करते हैं। अतः उद्योग की परिधि में वे समस्त उपक्रम सम्मिलित हैं, जिसमें नियोजकों एवं नियोजितों के सहयोग से मानवीय आवश्यकताओं या आकांक्षाओं की संतुष्टि के लिए एक व्यवस्थित गतिविधि के रूप में वस्तुओं अथवा सेवाओं के उत्पादन का कार्य सम्पन्न किया जाता है।[8] ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त क्षेत्रीय संसाधनों व सुविधाओं के आधार पर विविध प्रकार के उद्योगों को लगाने, उन्हें विकसित करने तथा औद्योगीकरण के स्तर को उच्च करने का प्रयास किया जाता है।[9] ग्रामीण संसाधनों का सुनिश्चित उपयोग निर्धारित करते हुए सभी को पूर्ण रोजगार दे सकेगा।[10] ग्रामीण औद्योगीकरण संरचना दो प्रकार की हो सकती है।[11]

अ– ग्रामीण क्षेत्र में हस्तशिल्प, छोटे एवं कुटीर उद्योगों का विकास तथा

ब– कारखानों का नगरीय क्षेत्र से ग्रामीण क्षेत्रों की ओर स्थानान्तरण।

तालिका सं0–1

विकास खण्डवार उद्योगों की संख्या एवं प्रकार–2012

क्रम	विकास खण्ड का नाम	कृषि आधारित उद्योग	वन और लकड़ी पर आधारित उद्योग	इंजिनियरिंग एवं मरम्मत सम्बन्धी उद्योग	रेडीमेड सम्बन्धी वस्त्र उद्योग	आभूषण सम्बन्धी उद्योग	रिपेयरिंग सर्विस सम्बन्धी उद्योग	अन्य उद्योग	कुल योग
1	अतरौलिया	–	–	01	–	01	–	–	02
2	कोयलसा	–	01	04	–	04	01	01	11
3	अहिरौला	02	–	02	–	–	–	–	04
4	महराजगंज	04	–	02	–	–	–	–	06
5	हरैया	–	05	04	01	–	–	–	10
6	बिलरियागंज	07	02	01	01	–	–	–	11
7	अजमतगढ़	03	01	02	02	–	03	01	12
8	तहबरपुर	–	02	03	–	–	–	–	05
9	मिर्जापुर	04	03	09	04	11	03	02	36
10	मुहम्मदपुर	–	–	04	–	02	01	01	08
11	रानी की सराय	03	–	12	01	03	03	02	24
12	पल्हनी	13	08	16	04	02	05	05	53
13	सठियांव	–		02	–	01	01	–	04
14	जहानागंज	–	01	–	–	–	–	–	01
15	पवई	–	–	04	–	–	02		06
16	फूलपुर	–	–	11	–	–	04	01	16
17	मार्टिनगंज	–	01	–	–	–	–	–	01
18	ठेकमा	10	08	09	02	–	07	01	37
19	लालगंज	02	02	05	–	–	03	–	12
20	मेहनगर	10	13	14	05	01	08	–	51
21	तरवां	–	–	02	–	–	–	–	02
22	पल्हना	–	–	–	–	–	–	–	00
योग	**22**	**58**	**47**	**107**	**20**	**25**	**41**	**14**	**312**

जनपद आजमगढ़ कृषि अर्थतन्त्र वाला एक पिछड़ा क्षेत्र है। इसीलिए इसपर आधारित औद्योगिक विकास निम्न स्तर का है। जो कुछ भी कृषि पर आधारित उद्योग विकसित हुए हैं, वे परम्परागत रूप में स्थानीय उद्यमियों द्वारा स्थानीय संसाधनों पर आधारित हैं। कृषि के अतिरिक्त प्राथमिक संसाधनों में वन संसाधन, पशु संसाधन भी कृषि से सम्बन्धित हैं। इसीलिए प्रस्तुत अध्ययन में कृषि वन और पशु संसाधनों के साथ कृषि आधारित उद्योगों के अन्तर्गत रखा गया है।

तालिका 1 के आधार पर यह स्पष्ट किया जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित उद्योगों की संख्या 58, वन और लकड़ी पर आधारित उद्योगों की संख्या 47, पशु और पशु उत्पादनों पर आधारित उद्योगों की संख्या–04 हैं। इस तरह कृषि आधारित कुल उद्योगों की संख्या 109 है। मानचित्र संख्या 1 और 2 के आधार पर इन उद्योगों के वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण किया जा सकता है। सर्वप्रथम कृषि को कच्चे माल के रूप में प्रयोग में लाने वाले उद्योगों का अध्ययन किया जाए, तो इसके अन्तर्गत खाद्यानों पर आधारित आटा–चावल और दाल के छोटे–छोटे कारखाने आते हैं। इसी में तिलहन पर आधारित गन्ना और आलू पर आधारित भी छोटे–छोटे पारिवारिक और सम्बन्धित उद्योग यहां विकसित है। ये सभी उद्योग पारिवारिक आधार पर अथवा औद्योगिक इकाई के रूप में स्थानीय संसाधनों के आधार पर विकसित हैं। इसी के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की सब्जियों, खाद्यान्नों और दुग्ध उत्पादनों पर आधारित प्रसंस्करण उद्योग भी विकसित हैं। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न विकासखण्ड वार इनका अवलोकन पर यह स्पष्ट होता है कि कृषि पर आधारित सर्वाधिक उद्योग पल्हनी विकास खण्ड से सम्बन्धित हैं। इनकी संख्या 13 है। इसी तरह ठेकमा और मेहनगर में 10–20 कृषि उद्योग है। बिलरियागंज में 07 कृषि उद्योग है। अन्य विकास खण्डों में इनकी संख्या 2–3 है। मानचित्र संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में कृषि संसाधनों पर आधारित उद्योग असंतुलित रूप में विकसित है। इनका सर्वाधिक केन्द्रीकरण अध्ययन क्षेत्र के उत्तरी–पूर्वी भाग से लेकर दक्षिण–पश्चिमी क्षेत्र तक सड़कों के सहारे हैं। मुख्य रूप से पल्हनी विकास खण्ड इनका सर्वाधिक केन्द्रीयकरण है। क्योंकि यहां जिला मुख्यालय की सुविधा है। पूंजी और विपणन केन्द्र की अधिकता है। प्रशासनिक और आर्थिक संस्थाएं शीघ्रता से उपलब्ध हैं। इन सब के अतिरिक्त आजमगढ़ मुख्यालय का सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र और बढ़ते औद्योगिक केन्द्रों से सीधा सम्पर्क है। इसलिए कच्चे संसाधनों के आयात की सुविधा, उत्पादित सामानों के विपणन की सुविधा यहां उपलब्ध हैं। इसी से सटा हुआ बिलरियागंज विकास खण्ड, रानी की सराय और दक्षिण पश्चिम में ठेकमा, मेहनगर विकास खण्ड में कृषि उत्पादनों पर आधारित औद्योगिक दष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। इनके अतिरिक्त मिर्जापुर, महराजगंज, कोयलसा, अजमतगढ़, लालगंज में भी छोटे–बड़े कृषि उद्योग कही–कहीं स्थापित हैं। क्षेत्रीय रूप में अध्ययन क्षेत्र का उत्तरी पश्चिमी भाग जो कृषि विकास की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण है। वहां कृषि सम्बन्धी उद्योगों का अभाव है। दक्षिणी–पूर्वी भाग में जहानगंज, सठियांव, तरवा, पल्हना विकास खण्डों में भी कृषि सम्बन्धी उद्योग कम हैं। जबकि कृषि विकास यहां उच्च स्तर का है। यहां भी सड़क मार्ग अविकसित विरल जनसंख्या, विपणन का विकसित न होना, कृषि सम्बन्धी, उद्योगों के पिछड़ेपन का कारण हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय रूप में कृषि विकास कृषि सम्बन्धी उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित नहीं कर पाया है क्योंकि अकेले कच्चेमाल की उपलब्धता अन्य आवश्यक संसाधनों के न रहने पर उद्योगों के विकास को प्रोत्साहित नहीं कर पाती है। इसीलिए यहां कृषि आधारित उद्योग आजमगढ़ से लेकर ठेकमा तक राज्य मार्ग के सहारे अधिक विकसित हैं। जहां परिवहन, पूंजी और अन्य सुविधाओं की उपलब्धता के कारण उद्योग स्थापित हैं।

कृषि विकास और कृषि आधारित औद्योगीकरण

प्रत्यक्ष रूप में यह माना जा सकता है कि जिन क्षेत्रों में कृषि विकास उच्च स्तर का है। उन क्षेत्रों में कृषि आधारित उद्योग भी अधिक विकसित होंगे, लेकिन अध्ययन क्षेत्र में दोनों में धनात्मक सह सम्बन्ध हैं, लेकिन वह भी निम्न स्तर का है। तालिका संख्या 2 के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास स्तर ज्ञात करने के लिए निम्नलिखित 14 चरों का सहारा लिया गया है।

1. कुल भौगोलिक क्षेत्र से शुद्ध कृषि क्षेत्र का प्रतिशत।
2. एक से अधिक बार बोये गये क्षेत्र का शुद्ध कृषि क्षेत्र से प्रतिशत।
3. खाद्यान्न क्षेत्र का सकल बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत।
4. दलहन क्षेत्र का सकल बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत।
5. प्रति हेक्टेयर खाद्यान्न उत्पादन (1000 किग्रा) में।
6. प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता।
7. शुद्ध बोये गये क्षेत्र से सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत।
8. कुल सिंचित क्षेत्र से नहरों द्वारा सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत।
9. कुल सिंचित क्षेत्र से ट्यूबवेल/नलकूप द्वारा सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत।
10. प्रति हेक्टेयर सकल बोये गये क्षेत्र पर उर्वरक का प्रयोग।
11. प्रति कृषक उर्वरक का उपयोग किग्रा0 में।
12. प्रति 100 वर्ग किमी0 पर बीज वितरण/विक्रय केन्द्रों की संख्या।
13. प्रति लाख जनसंख्या पर बीज वितरण/विक्रय केन्द्रों की संख्या।
14. प्रति लाख जनसख्या पर उर्वरक वितरण/विक्रय केन्द्रों की संख्या।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका संख्या – 2
कृषि विकास के चर

क्रम	विकास खण्ड	कुल भौगोलिक क्षे0 से शुद्ध कृषि क्षेत्र का प्रतिशत	एक से अधिक बार बोये गये क्षे0 का शुद्ध कृषि क्षेत्र से प्रतिशत	खाद्यान्न क्षेत्र का सकल बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत	दलहन क्षेत्रफल का सकल बोये गये क्षेत्र से प्रतिशत	प्रति हे0 खाद्यान्न उत्पादन (1000 किग्रा0) में	प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उपलब्धता	शुद्ध बोये गये क्षे0 से सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत	कुल सिंचित क्षेत्र से नहरो द्वारा सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत	कुल सिंचित क्षेत्र से ट्यूबवेल/ नलकूल द्वारा सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत	प्रति हे0 सकल बोये गये क्षेत्र पर उर्वरक का उपयोग किग्रा0	प्रति कृषक उर्वरक का उपयोग किग्रा0	प्रति 100 वर्ग किमी0 पर बीज वितरण/ विक्रय केन्द्रों की संख्या	प्रति लाख जनसंख्या पर बीज वितरण/ विक्रय केन्द्रों की संख्या	प्रति लाख जनसंख्या पर उर्वरक वितरण/ विक्रय केन्द्रों की संख्या
1	अतरौलिया	72.70	63.25	98.10	83.7	393.58	3.45	195	2.4	100.4	176.8	203.99	12.59	14.94	34.27
2	कोयलसा	74.50	56.79	95.10	68.9	434.15	2.70	168.6	9.6	92	155.5	152.19	9.06	9.33	49.78
3	अहिरौला	72.08	70.14	86.80	78.3	536.25	3.009	187.4	22.7	75.5	115.5	146.29	8.67	9.54	21.32
4	महराजगंज	67.93	52.83	93	29.9	564.15	3.507	177.4	3.5	98	116.9	143.56	9.58	14.29	47.25
5	हरैया	66.35	57.74	87.4	43.6	554.62	3.22	135.4	3.1	99.3	112.1	136.34	8.33	12.80	30.25
6	बिलरियागंज	76.70	77.51	88.8	61.2	575.49	2.73	172.1	5.2	97.3	109.5	151.33	12.04	11.41	25.67
7	अजमतगढ़	69.42	65.84	96.1	56.5	477.80	2.52	206.2	5.1	125	142.9	133.24	10.71	11.60	32.18
8	तहबरपुर	74.85	69.02	77.4	88.5	457.23	2.95	141.8	18.1	58.6	120.2	148.46	12.48	14.23	26.52
9	मिर्जापुर	67.54	62.00	93.1	10.67	396.93	2.24	166.7	18.6	81.5	166.9	169.49	7.852	7.38	20.45
10	मुहम्मदपुर	69.29	49.95	95.9	73.8	470.57	2.83	145.1	22.5	75.1	144.8	159.94	7.294	8.43	31.92
11	रानी की सराय	69.70	63.15	97.5	74.6	368.62	2.33	159	13.9	85	187.9	175.84	10.071	8.86	35.47
12	पल्हनी	65.27	58.17	96.9	72.5	301.90	1.78	174.6	3.5	97.9	227.8	27.64	19.64	14.75	44.25
13	सठियांव	73.90	61.69	98	57.5	458.02	2.46	148.6	0	103.2	151.8	226.51	8.528	7.54	25.85
14	जहानागंज	74.81	81.51	93.4	50.8	547.39	3.57	189.1	9.9	92	121	180.77	8.292	9.79	29.39
15	पवई	71.69	70.03	91.8	75.5	557.64	3.12	175.1	22.3	73.9	117	141.66	8.696	10.08	21.29
16	फूलपुर	69.14	66.34	92.7	88.6	486.99	2.80	172.6	17.4	83.1	135.13	152.93	9.414	10.35	34.50
17	मार्टिनगंज	69.20	74.08	97.3	64.7	663.56	3.99	114.5	37.9	57.6	104	152.29	6.886	9.64	42.19
18	ठेकमा	68.72	71.20	98.5	58.1	630.04	3.60	168.2	19.2	78.7	111	170.11	10.101	13.15	46.91
19	लालगंज	74.28	81.40	95.2	46.1	665.53	3.71	174.3	19.2	80.7	101.7	169.23	7.0425	8.37	43.00
20	मेहनगर	73.55	92.49	91.4	41.5	580.13	3.69	195.3	24.3	73.6	112	153.29	12.286	14.63	15.91
21	तरवां	72.23	76.12	92.0	55.9	623.05	3.79	171	18.2	81.8	105	133.68	10.919	14.60	24.95
22	पल्हना	70.77	76.62	99.4	46.2	424.84	4.19	159.1	15.5	85.2	166.1	219.16	8.398	11.84	41.44

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका संख्या – 3
कृषि विकास का Z Score

क्रम	विकास खण्ड	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score
1	अतरौलिया	0.53	-0.47	0.94	0.89	-1.181	0.57	1.28	-1.25	0.95	1.25	1.25	0.97	1.47	0.138
2	कोयलसा	0.98	-1.11	0.33	0.14	-0.76	-0.65	0.02	-0.49	0.39	0.59	-0.119	-0.324	-0.76	1.753
3	अहिरौला	0.32	0.20	-1.34	0.62	0.29	-0.15	0.92	0.92	-0.71	-0.65	-0.27	-0.47	-0.68	-1.21
4	महराजगंज	-1.05	-1.50	-0.09	-1.83	0.58	0.65	0.44	-1.15	0.79	-0.60	-0.34	-0.136	1.217	1.489
5	हरैया	-1.58	-1.01	-1.22	-1.14	0.48	0.20	-1.55	-1.19	0.88	-0.75	-0.539	-0.59	0.618	-0.280
6	बिलरियागंज	1.87	0.92	-0.94	-0.247	0.70	-0.59	0.19	-0.97	0.74	-0.83	-0.14	0.77	0.0617	-0.757
7	अजमतगढ़	-0.56	-0.22	0.53	-0.48	-0.30	-0.95	1.81	-0.98	2.60	0.201	-0.62	0.280	0.140	-0.079
8	तहबरपुर	1.25	0.09	-3.25	1.13	-0.52	-0.33	-1.25	0.42	-1.84	0.506	-0.218	0.932	1.191	-0.669
9	मिर्जापुर	-1.18	-0.60	-0.07	2.06	-1.15	-1.39	-0.06	0.47	-0.31	0.949	0.339	-0.772	-1.548	-1.301
10	मुहम्मदपुर	-0.60	-1.78	0.49	-0.11	-0.38	-0.44	-1.093	0.89	-0.74	0.260	0.085	-0.978	-1.130	-0.107
11	रानी की सराय	-0.46	-0.98	0.82	1.44	-1.44	-1.25	0.43	-0.03	-0.077	1.603	0.507	0.044	-0.95	0.263
12	पल्हनी	-1.94	-0.97	0.70	1.34	-2.13	-2.15	0.31	-1.15	0.78	2.847	-3.420	3.569	1.398	1.178
13	सठियांव	0.93	-0.63	0.92	-0.43	-0.51	-1.03	0.92	-1.53	1.14	0.478	1.850	-0.523	-1.487	-0.739
14	जहानागंज	1.23	1.32	-0.009	-0.77	0.41	0.76	1.00	-0.46	0.39	-0.48	0.637	-0.610	-0.583	-0.370
15	पवई	0.19	0.19	-0.33	0.48	0.51	0.03	0.33	0.87	-0.82	-0.605	-0.398	-0.462	-0.468	-1.214
16	फूलपुर	-0.65	-0.17	-0.15	1.14	-0.21	-0.49	0.21	0.34	-0.204	-0.035	-0.099	-0.197	-0.362	0.162
17	मार्टिनगंज	-0.63	0.59	0.78	-0.06	1.61	1.46	-2.55	2.56	-1.91	-1.010	-0.116	-1.128	-0.645	0.962
18	ठेकमा	-0.79	0.30	1.02	-0.40	1.26	0.81	0.0071	0.54	-0.49	-0.792	0.355	0.055	0.760	1.454
19	लालगंज	1.06	1.31	0.35	-1.01	1.63	1.00	0.297	0.54	-0.36	-1.0826	0.332	-1.07	-1.152	1.047
20	मेहनगर	0.817	2.40	-0.41	-1.24	0.75	0.95	1.29	1.094	-0.84	-0.761	-0.0902	0.860	1.353	-1.77
21	तरवां	0.37	0.79	-0.29	-0.51	1.19	1.12	0.140	0.43	-0.29	-0.979	-0.626	0.356	1.340	-0.83
22	पल्हना	-0.11	0.84	1.20	-1.006	-0.85	1.77	-0.426	0.14	-0.063	0.924	1.655	-0.571	0.234	0.88

उपरोक्त चरों को तालिका संख्या–3 के अनुसार मानक मूल्यों (Z) में रूपान्तरित कर दिया गया है। पुनः मानक मूल्यों को जोड़कर सम्बन्धित कृषि विकास के स्तर को ज्ञात किया गया है जो तालिका संख्या–4 में प्रदर्शित है।

तालिका संख्या – 4
आजमगढ़ जनपद में कृषि विकास स्तर–2012

क्रमांक	विकास खण्ड	कृषि विकास स्तर (Z Score)
1	अतरौलिया	7.31
2.	कोयलसा	–.0074
3	अहिरौला	–2.21
4	महराजगंज	–1.54
5	हरैया	–7.67
6	बिलरियागंज	.79
7	अजमतगढ़	1.38
8	तहबरपुर	–5.71
9	मिर्जापुर	–4.57
10	मोहम्मदपुर	–5.62
11	रानी की सराय	–.45
12	पल्हनी	.33
13	सठियांव	–.47
14	जहानागंज	–2.47
15	पवई	–1.67
16	फूलपुर	–.69
17	मार्टिनगंज	–.07
18	ठेकमा	4.08
19	लालगंज	2.88
20	मेहनगर	4.39
21	तरवा	2.22
22	पल्हना	4.61

उपरोक्त तालिका संख्या–4 से स्पष्ट है कि आजमगढ़ में सर्वाधिक कृषि विकास अतरौलिया में हुआ है, दूसरा स्थान ठेकमा का है। जबकि औसत से अधिक कृषि विकास बिलरियागंज, आजमगढ़, पल्हनी, जहानागंज, लालगंज, मेहनगर, तरवा और पल्हना में भी हुआ है। क्षेत्रों के आधार पर यह माना जा सकता है कि औसत से अधिक उच्च स्तर का कृषि विकास उत्तर–पश्चिम में अतरौलिया मध्यपूर्व में बिलरियागंज, अजमतगढ़ और दक्षिणी–पूर्वी भागों में जहानागंज से लेकर पल्हना तक हुआ है जबकि उत्तरी मध्यवर्ती भाग और मध्य पश्चिमी भाग में कृषि विकास स्तर निम्न है। कृषि विकास स्तर के क्षेत्रीय प्रतिरूप की तुलना जनपद में कृषि आधारित उद्योगों के वितरण से की जाए, तो तालिका संख्या–1 के अनुसार सर्वाधिक कृषि आधारित उद्योग पल्हनी विकास खण्ड में है, दूसरा स्थान ठेकमा और मेहनगर का है। तीसरा बिलरियागंज का है। इसी तरह अन्य विकास खण्ड में अहिरौला, आजमगढ़, मिर्जापुर, रानी की सराय, लालगंज में भी कृषि उद्योग विकसित है, लेकिन उनकी संख्या कम है।

स्पष्ट होता है कि कृषि विकास स्तर के अनुसार क्षेत्र के दक्षिणी–पूर्वी विकास खण्डों में कृषि आधारित उद्योग भी विकसित है। जबकि मध्यवर्ती और उत्तरी–पश्चिमी क्षेत्र में कृषि विकास कम है। लेकिन कृषि आधारित उद्योग अधिक विकसित है। इससे यह स्पष्ट निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययन क्षेत्र में मार्ग संगमता, क्षेत्रीय अभिगम्यता, तथा नगरीय सुविधाओं ने कृषि आधारित उद्योगों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है।

कृषि आधारित औद्योगीकरण का स्तर

कृषि आधारित औद्योगीकरण का स्तर ज्ञात करने के लिए कृषि पर आधारित कच्चे माल, वन और लकड़ी पर आधारित तथा पशु उत्पादों पर आधारित उद्योगों को विकास खण्डवार जोड़कर उन्हें कोटि क्रम प्रदान किया गया है तथा निम्न कोटि से बढ़ते हुए क्रम में कृषि औद्योगीकरण का उच्च से निम्न स्तर निर्धारित होता है। यह तालिका संख्या–5 से स्पष्ट है।

तालिका संख्या–5
आजमगढ़ जनपद में कृषि आधारित उद्योगों का वितरण–2012

क्रमांक	विकास खण्ड का नाम	कृषि और प्राथमिक संसाधनों पर आधारित उद्योगों का वितरण	कोटि क्रम
1	अतरौलिया	–	–
2.	कोयलसा	01	14
3	अहिरौला	02	11.5
4	महराजगंज	04	08
5	हरैया	05	06
6	बिलरियागंज	09	04
7	अजमतगढ़	04	8
8	तहबरपुर	02	11.5
9	मिर्जापुर	07	05
10	मोहम्मदपुर	–	–
11	रानी की सराय	03	10
12	पल्हनी	21	02
13	सठियांव	–	–
14	जहानागंज	01	14
15	पवई	–	–
16	फूलपुर	–	–
17	मार्टिनगंज	01	14
18	ठेकमा	18	03
19	लालगंज	04	08
20	मेहनगर	23	01
21	तरवा	–	–
22	पल्हना	–	–

उपरोक्त तालिका संख्या–5 से स्पष्ट होता है कि कोटि क्रमानुसार उच्चतम कृषि औद्योगीकरण का स्तर मेहनगर में मिलता है। इसके बाद पल्हनी, ठेकमा और बिलरियागंज आते हैं। इस तरह मानचित्र संख्या–3 से स्पष्ट होता है कि कृषि औद्योगीकरण उच्च स्तर में मेहनगर पल्हनी, ठेकमा और बिलरियागंज सम्मिलित हैं। जबकि मध्यम स्तर में मिर्जापुर, हरैया, महराजगंज, अजमतगढ़ और लालगंज सम्मिलित हैं। शेष विकास खण्ड निम्न स्तर के औद्योगीकरण में हैं।

इससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र के मध्यवर्ती और उत्तरी–पूर्वी भागों में कृषि औद्योगीकरण का स्तर उच्च है। जबकि दक्षिण मध्यवर्ती और उत्तरी भागों

में मध्यम स्तरीय कृषि औद्योगीकरण है। पश्चिमी और उत्तरी–पश्चिमी भागों में निम्न स्तरीय कृषि औद्योगीकरण स्तर है।

कृषि विकास स्तर से तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि कृषि विकास स्तर और कृषि औद्योगीकरण स्तर में धनात्मक सह सम्बन्ध तो है, लेकिन कुछ क्षेत्रों में कृषि विकास स्तर की अपेक्षा कृषि औद्योगीकरण का स्तर निम्न है। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि अध्ययन क्षेत्र में कृषि आधारित कच्चे माल की अपेक्षा अवस्थापना सुविधाओं ने कृषि औद्योगीकरण को अधिक प्रभावी किया है।

कृष्येत्तर औद्योगीकरण

किसी पिछड़े अर्थतन्त्र में प्राथमिक कार्यों के बाद जब द्वितीयक कार्यों का विकास होता है, तो वह स्थानीय संसाधनों पर ही आधारित होता है लेकिन मनुष्य को स्थानीय संसाधनों और उससे उत्पादित सामानों के अतिरिक्त बहुत से दूसरे सामानों की आवश्यकता होती है। यह आवश्यकता मांग उत्पन्न करती है और जिस प्रकार की मांग उत्पन्न होती है। वैसे सामानों की आपूर्ति बाहरी स्रोतों से प्रारम्भ होती है। कुछ समय बाद मांग पर आधारित स्थानीय स्तर पर उद्योगों का विकास होने लगता है। ऐसे उद्योग शुद्ध रूप में स्थानीय मांग के अनुसार ही वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। चूंकि इस प्रकार के उद्योग ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीणों की आवश्यकता को तुरन्त पूरा करते हैं। इसलिए स्थानीय स्रोतों से अथवा बाहरी स्रोतों से कच्चे माल को प्राप्त करते हैं और सामानों को बनाकर स्थानीय स्तर पर ही उनकी आपूर्ति करते हैं।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ सघन जनसंख्या वाला कृषि प्रधान क्षेत्र है। इसीलिए कृषि कार्य को आसान बनाने वाले उपकरणों और यन्त्रों की यहां आवश्यकता रहती है जिससे ऐसे छोटे–बड़े उद्योग स्वतः विकसित हो जाते हैं। इसीलिए जनपद आजमगढ़ में कृष्येत्तर उद्योगों में इंजिनियरिंग, विभिन्न यन्त्रों के मरम्मत, रेडिमेड वस्त्र और सिलाई उद्योग, आभूषण सम्बन्धी उद्योग, सेवा सम्बन्धी और अन्य उद्योग भी विकसित हुए हैं। जिनकी कुल संख्या जनपद में 207 है। विकास खण्डवार इनका वितरण तालिका संख्या–1 से स्पष्ट होता है।

इंजिनियरिंग एवं मरम्मत सम्बन्धी उद्योग

जनपद में ऐसे उद्योग प्रायः छोटे–बड़े कृषि यन्त्रों के निर्माण और उनकी मरम्मत से सम्बन्धित है। उनकी कुल संख्या 107 है। विकास खण्डवार इन उद्योगों के वितरण का विश्लेषण मानचित्र संख्या–4 की सहायता से किया जा सकता है। मानचित्र और तालिका से स्पष्ट है कि इंजिनियरिंग और मरम्मत सम्बन्धी उद्योगों का सर्वाधिक केन्द्रीकरण पल्हनी विकास खण्ड में है, दूसरा स्थान मेहनगर, तीसरा रानी की सराय का है। इसके बाद फूलपुर, ठेकमा और मिर्जापुर विकास खण्ड आते हैं। अन्य विकास खण्डों में लालगंज, हरैया, कोयलसा महत्वपूर्ण हैं। मानचित्र से स्पष्ट है कि इन उद्योगों का वितरण जनपद मुख्यालय और विकास खण्ड मुख्यालयों पर है। इसके अतिरिक्त सड़कों के नोडल केन्द्रों पर इनका विकास हुआ हे। सामान्यतया आजमगढ़ से वाराणसी और इलाहाबाद के मार्ग पर तथा आजमगढ़ से फूलपुर और लखनऊ के जाने वाले मार्ग पर कस्बों और बड़ी बाजारों में ऐसे उद्योग स्थापित हैं। इससे स्पष्ट होता है। जिन केन्द्रों पर सामानों के आवागमन की सुविधा और बाजार की सुविधा अधिक है। वहीं पर इंजिनियरिंग उद्योग विकसित हुए हैं। इसी से आजमगढ़ नगर के आस–पास वाले केन्द्रों में इनका वितरण अधिक है क्योंकि यहां से सम्पूर्ण जनपद में इनके वितरण की व्यवस्था आसान हो जाती है।

रेडिमेड वस्त्र और सिलाई उद्योग

जनपद आजमगढ़ में ऐसे उद्योगों की संख्या 20 है। विकास खण्डवार विश्लेषण तालिका संख्या–1 और मानचित्र संख्या–5 के विश्लेषण से किया जा सकता है। इससे स्पष्ट है कि रेडिमेड वस्त्र सम्बन्धी उद्योगों का केन्द्रीकरण विकासखण्ड पल्हनी, मिर्जापुर और मेहनगर में अधिक है। मानचित्र से यह स्पष्ट होता है कि आजमगढ़ नगर मुख्यालय के आस–पास के बाजार केन्द्रों पर इनका केन्द्रकरण है। सामान्य रूप में सड़क मार्गों के नोडल केन्द्रों पर स्थित होने के कारण यहां से सम्पूर्ण जनपद में आपूर्ति की सुविधा उपलब्ध हो जाती हैं।

आभूषण सम्बन्धी उद्योग

जनपद में आभूषण बनाने और विपणन का कार्य मिर्जापुर, रानी की सराय, पल्हनी और कोयलसा विकास खण्डों में अधिक होता है। मानचित्र संख्या–6 के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि आभूषण निर्माण सम्बन्धी उद्योग विकास खण्ड पल्हनी से रानी की सराय, मिर्जापुर एवं मुहम्मदपुर तक केन्द्रित हैं। यहीं से इनका वितरण जनपद के विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है।

सेवा सम्बन्धी और अन्य उद्योग

जनपद आजमगढ़ में स्थानीय जनसंख्या की आवश्यकता और मांग पर भी अनेक प्रकार के उद्योग विकसित हुए हैं। जो ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न सेवाओं को प्रदान करते हैं। जिनमें संचार, परिवहन और अन्य सेवायें सम्मिलित हैं। ऐसे उद्योगों का केन्द्रीकरण भी मुख्य नगरों और बाजार केन्द्रों पर अधिक है। सामान्य रूप में विकासखण्ड, पल्हनी, ठेकमा, मेहनगर और फूलपुर में सेवा सम्बन्धी उद्योगों की अधिकता है जबकि लालगंज, रानी की सराय, मिर्जापुर और अजमतगढ़ में भी ऐसे उद्योग पर्याप्त संख्या में हैं। मानचित्र संख्या–7 से स्पष्ट होता है कि अधिकतर उद्योग पल्हनी, मेहनगर, ठेकमा और रानी की सराय में ही केन्द्रित है। यहां सड़क मार्ग जाल की अभिगम्यता अधिक होने के कारण विभिन्न सेवाओं की मांग अधिक रहती है। इसीलिए यहां सेवा सम्बन्धी उद्योग केन्द्रित है।

इस तरह सम्पूर्ण जनपद में कृषि के अतिरिक्त मांग पर आधारित और अन्य उद्योगों के वितरण से यह स्पष्ट होता है कि पिछड़े हुए प्राथमिक अर्थतन्त्र में भी अनेक प्रकार के उद्योग विकसित होते हैं। जिनकी क्षेत्र में मांग अधिक होती है उसके साथ ही ऐसे उद्योग प्राथमिक कार्यों को आसान भी बनाते हैं।

कृष्येत्तर उद्योगों के क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप और औद्योगीकरण के स्तर का और अधिक स्पष्टीकरण जनपद के औद्योगिक विकास स्तर की सहायता से किया जा सकता है। इसके लिए औद्योगिक विकास स्तर के निम्नलिखित चरों का चयन किया गया है।

1. प्रति हजार वर्ग किमी0 पर खादी ग्रामोद्योग इकाईयों की संख्या।
2. प्रति लाख जनसंख्या पर खादी ग्रामोद्योग इकाईयों की संख्या।
3. प्रति लाख जनसंख्या पर लघु औद्योगिक इकाईयों की संख्या।
4. प्रति हजार वर्ग किमी0 पर लघु औद्योगिक इकाईयों की संख्या।
5. पंजीकृत कारखानों में कार्यरत श्रमिकों की संख्या।
6. लघु उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की संख्या।

उपरोक्त चरों को जेड स्कोर में परिवर्तित करके विकास खण्ड वार मूल्यों को जोड़कर समन्वित औद्योगिक विकास स्तर ज्ञात किया गया है। तालिका संख्या–6 व 7 के अनुसार जनपद आजमगढ़ में सर्वाधिक औद्योगिक विकास सठियांव विकास खण्ड में है। दूसरा स्थान पल्हनी, तीसरा रानी की सराय, चौथा लालगंज का है। जबकि मध्यम स्तरीय औद्योगिक विकास फूलपुर, अतरौलिया, मेहनगर, अजमतगढ़ में है।

तालिका संख्या – 6
औद्योगिक विकास के चर

क्रम	विकास खण्ड	प्रति हजार वर्ग किमी0 पर खादी ग्रामोद्योग इकाईयों की सं0	प्रति लाख जनसंख्या पर खादी ग्रामोद्योग इकाईयों की सं0	प्रति लाख जनसंख्या पर लघु औद्योगिक इकाईयों की सं0	प्रति हजार जनसंख्या पर लघु औद्योगिक इकाईयों की सं0	पंजीकृत कारखानों में कार्यरत श्रमिकों की संख्या	लघु उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों की संख्या
1	अतरौलिया	22.21	2.63	2.63	0.026	0	15
2	कोयलसा	18.13	1.86	2.48	0.024	0	20
3	अहिरौला	5.10	0.56	1.68	0.016	0	20
4	महराजगंज	4.16	0.62	2.48	0.024	0	20
5	हरैया	7.57	1.16	0	0	0	0
6	बिलरियागंज	15.05	1.42	1.90	0.019	0	20
7	अजमतगढ़	19.47	2.11	2.63	0.026	0	25
8	तहबरपुर	11.34	1.29	0.64	0.006	0	6
9	मिर्जापुर	30.20	2.84	3.40	0.0340	0	25
10	मुहम्मदपुर	20.84	2.40	1.20	0.012	0	15
11	रानी की सराय	35.96	3.16	13.93	0.139	0	90
12	पल्हनी	47.14	3.54	17.70	0.177	51	100
13	सठियांव	24.36	2.15	27.46	0.274	818	180
14	जहानागंज	16.58	1.95	3.91	0.039	0	25
15	पवई	14.49	1.68	0	0	0	0
16	फूलपुर	5.23	0.57	12.07	0.120	36	90
17	मार्टिनगंज	12.91	1.80	0	0	0	0
18	ठेकमा	13.17	1.71	3.43	0.0343	0	25
19	लालगंज	23.47	2.79	11.72	0.117	10	90
20	मेहनगर	16.02	1.90	8.27	0.082	0	50
21	तरवां	13.64	1.82	0	0	0	0
22	पल्हना	20.99	2.96	0	0	0	0

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

तालिका संख्या – 7
औद्योगिक विकास का Z Score

क्रम	विकास खण्ड	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score	Z Score
1	अतरौलिया	0.412	0.84	-0.39	-0.39	-0.24	-0.49
2	कोयलसा	0.004	-0.109	-0.41	-0.41	-0.24	-0.38
3	अहिरौला	-.3005	-1.72	-0.52	-0.52	-0.24	-0.38
4	महराजगंज	-1.39	-1.65	0.41	-0.41	-0.24	-0.38
5	हरैया	-1.05	-0.97	-0.77	-0.77	-0.24	-0.83
6	बिलरियागंज	-0.03	-0.65	-0.49	-0.49	-0.24	-0.38
7	अजमतगढ़	0.13	0.19	-0.39	-0.39	-0.24	-0.27
8	तहबरपुर	-0.67	-0.81	-0.67	-0.67	-0.24	-0.69
9	मिर्जापुर	1.21	1.09	-0.27	-0.27	-0.24	-0.49
10	मुहम्मदपुर	0.27	0.56	-0.59	-0.59	-0.24	1.18
11	रानी की सराय	1.78	1.50	1.23	1.23	-0.24	1.41
12	पल्हनी	2.90	1.96	1.78	1.78	0.055	3.21
13	सठियांव	0.62	0.24	3.18	3.18	4.56	-0.27
14	जहानागंज	-0.15	0.005	-0.20	-0.20	-0.24	-0.83
15	पवई	-0.36	-0.33	-0.77	-0.77	-0.24	1.18
16	फूलपुर	-1.28	-1.70	0.97	0.970	0.03	-0.83
17	मार्टिनगंज	-0.51	-0.18	-0.77	-0.77	-0.24	-0.27
18	ठेकमा	-0.49	-0.29	-0.27	-0.27	-0.24	1.18
19	लालगंज	0.53	1.035	0.92	0.92	0.18	0.29
20	मेहनगर	-0.20	-0.057	0.42	0.42	-0.24	-0.83
21	तरवां	-0.44	-0.16	-0.77	-0.77	-0.24	-0.83
22	पल्हना	0.28	1.24	-0.77	-0.77	-0.24	-0.83

अन्य विकास खण्डों में निम्न स्तरीय औद्योगिक विकास है। इससे स्पष्ट होता है कि जिन विकास खण्डों में उद्योगों की अधिक संख्या है उन्हीं विकास खण्डों में उच्च स्तरीय औद्योगिक विकास मिलता है। सामान्य रूप से यह स्तर आजमगढ़ नगर मुख्यालय और उसके आस–पास के क्षेत्रों में अधिक है। पल्हनी विकास खण्ड में उद्योगों की अधिकता और विविधता है। जबकि सठियांव विकास खण्ड में हथकरघा उद्योग अधिक संख्या में है। रानी की सराय और लालगंज विकास खण्ड सड़क मार्गों के नोडल केन्द्र पर है। इसलिए उनसे सम्बन्धित विकास खण्डों में भी मध्यम स्तरीय औद्योगिक विकास मिलता है।

कृष्येत्तर औद्योगीकरण का स्तर

जनपद आजमगढ़ में कृष्येत्तर औद्योगीकरण के क्षेत्रीय प्रतिरूप का अध्ययन करने के लिए विकासखण्डवार विभिन्न कृष्येत्तर उद्योगों का उपयोग किया गया है। तालिका संख्या–9 से स्पष्ट है कि जनपद में कुल कृष्येत्तर उद्योगों की सर्वाधिक संख्या 32 पल्हनी विकास खण्ड में है। दूसरा मिर्जापुर में 29 है, रानी की सराय में 21 है, मेहनगर में 28 है। इसके बाद ठेकमा, फूलपुर और कोयलसा में इनकी संख्या क्रमशः 10 से अधिक है। विकास खण्ड वार कुल कृष्येत्तर उद्योगों को कोटिक्रम प्रदान करके मानचित्र संख्या–8 बनाया गया है। इसमें निम्न कोटि मूल्य उच्च विकास स्तर को और अधिक कोटि मूल्य अपेक्षाकृत निम्न विकास स्तर को व्यक्त करते हैं। इस तरह कृष्येत्तर औद्योगीकरण का स्तर मानचित्र संख्या–8 से स्पष्ट होता है। मानचित्र के अनुसार कृष्येत्तर औद्योगीकरण का क्षेत्रीय प्रतिरूप निम्नलिखित स्तरों में विभाजित किया जा सकता है।

तालिका संख्या – 8
औद्योगिक विकास स्तर–2012

क्रम	विकास खण्ड	औद्योगिक विकास स्तर
1	अतरौलिया	–0.26
2	कोयलसा	–1.53
3	अहिरौला	–4.68
4	महराजगंज	–4.48
5	हरैया	–4.63
6	बिलरियागंज	–2.55
7	अजमतगढ़	–0.97
8	तहबरपुर	–3.75
9	मिर्जापुर	1.25
10	मुहम्मदपुर	–1.08
11	रानी की सराय	6.68
12	पल्हनी	9.88
13	सठियांव	14.99
14	जहानागंज	–1.055
15	पवई	–3.31
16	फूलपुर	–0.1
17	मार्टिनगंज	–3.3
18	ठेकमा	–1.83
19	लालगंज	4.34
20	मेहनगर	0.63
21	तरवां	–3.21
22	पल्हना	–1.09

तालिका संख्या – 9
कृष्येत्तर उद्योगों की संख्या और कोटि क्रमांक–2012

क्रम	विकास खण्ड	कृष्येत्तर उद्योग	कोटि
1	अतरौलिया	02	17
2	कोयलसा	10	07
3	अहिरौला	02	17
4	महराजगंज	02	17
5	हरैया	05	12
6	बिलरियागंज	02	17
7	अजमतगढ़	08	09
8	तहबरपुर	03	14
9	मिर्जापुर	29	02
10	मुहम्मदपुर	08	09
11	रानी की सराय	21	04
12	पल्हनी	32	01
13	सठियांव	04	13
14	जहानागंज	–	–
15	पवई	06	11
16	फूलपुर	16	06
17	मार्टिनगंज	–	–
18	ठेकमा	19	05
19	लालगंज	08	09
20	मेहनगर	28	03
21	तरवां	02	17
22	पल्हना	–	–

उच्च स्तर

इसके अन्तर्गत पल्हनी, रानी की सराय, मिर्जापुर, मेहनगर, ठेकमा विकास खण्ड सम्मिलित हैं। यहां कृष्येत्तर औद्योगीकरण का सर्वोत्तम स्तर है। आजमगढ़ नगर मुख्यालय वाले विकास खण्ड पल्हनी और उनसे जाने वाले वाराणसी, इलाहाबाद राजमार्ग के सहारे कस्बों और बाजारों में कृष्येत्तर उद्योगों की अधिकता है। यहां विभिन्न सामानों के मगांने और आपूर्ति करने की सुविधायें उपलब्ध हैं।

मध्यमस्तरीय औद्योगीकरण का स्तर

इसके अन्तर्गत कोयलसा, सठियांव, फूलपुर, मुहम्मदपुर विकास खण्ड सम्मिलित हैं। यहां मध्यमवर्गीय औद्योगीकरण हुआ है। ये विकास खण्ड सर्वोच्च विकसित स्तर के आस–पास हैं। जिससे कृष्येत्तर उद्योगों के लिए सुविधायें उपलब्ध हैं।

निम्न स्तरीय औद्योगीकरण

जनपद आजमगढ़ में कृष्येत्तर औद्योगीकरण का निम्न स्तर अधिकतर उत्तरी–पूर्वी भागों में हरैया, महराजगंज, बिलरियागंज, अजमतगढ़, तहबरपुर, पवई में मिलता है तथा दक्षिणी भाग में मार्टिनगंज, लालगंज, तरवा आदि विकासखण्डों में मिलता है।

इस तरह स्पष्ट होता है कि जनपद आजमगढ़ के मध्यवर्ती भाग में कृष्येत्तर उद्योगों का सर्वाधिक विकास हुआ है और बाहरी भागों में अपेक्षाकृत कम विकास हुआ है जो यह सिद्ध करता है कि कृष्येत्तर उद्योगों की स्थापना में परिवहन तन्त्र, पूंजी, बाजार और मांग और आपूर्ति अधिक महत्वपूर्ण हैं।

इस प्रकार समन्वित औद्योगिक विकास स्तर और कृष्येत्तर औद्योगिक विकास स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि जिन विकासखण्डों में औद्योगिक विकास स्तर उच्च है। उन्हीं विकास खण्डों में कृष्येत्तर और मांग पर आधारित उद्योगों का अधिक केन्द्रीकरण हुआ है। तालिका के अनुसार उच्च स्तरीय औद्योगिक विकास, रानी की सराय, पल्हनी, सठियांव, लालगंज, मेहनगर व मिर्जापुर में मिलता है। यहां जनपदीय औसत से अधिक औद्योगिक विकास हुआ है जबकि मांग पर आधारित औद्योगीकरण भी पल्हनी, रानी की सराय, मिर्जापुर, मेहनगर, ठेकमा, सठियांव, लालगंज में अधिक हुआ है। इस तरह क्षेत्रीय रूप में दोनों में समानता पायी जाती है। जिससे स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रकार के उद्योग प्रायः परिवहन पूंजी और बाजार की सुविधा वाले क्षेत्रों में अधिक केन्द्रित होते हैं, क्योंकि उन्हें उत्पादित सामानों के तुरन्त विपणन की सुविधा मिल जाती है, जिससे पूंजी बाधित नहीं होती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि कृषि विकास स्तर और कृषि औद्योगीकरण स्तर में धनात्मक सह सम्बन्ध है लेकिन बहुत से क्षेत्रों में जहां कृषि विकास स्तर उच्च है, वहाँ कृषि औद्योगीकरण निम्न है। इसी तरह कृष्येत्तर औद्योगीकरण का स्तर ज्ञात करने के लिए विकास खण्डवार कृष्येत्तर उद्योगों को कोटि क्रम प्रदान करके कृष्येत्तर औद्योगीकरण के स्तर के क्षेत्रीय प्रतिरूप को ज्ञात किया गया है। ग्रामीण औद्योगीकरण के स्तर के क्षेत्रीय प्रतिरूप के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न ग्रामीण उद्योगों के क्षेत्रीय वितरण के आधार पर ही सापेक्षिक रूप में औद्योगीकरण के स्तरों का विकास हुआ। ग्रामीण औद्योगीकरण के दोनों आयामों कृषि और कृष्येत्तर औद्योगीकरण के स्तर का क्षेत्रीय प्रतिरूप अपेक्षाकृत मध्यवर्ती और दक्षिणी–पश्चिमी भागों में अधिक ऊँचा है। जबकि उत्तरी पश्चिमी और दक्षिणी–पूर्वी भागों में निम्न स्तरीय औद्योगीकरण है। जो यह सिद्ध करता है कि अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण औद्योगीकरण के विकास में क्षेत्रीय संसाधनों की अपेक्षा परिवहन तंत्र का अधिक प्रभाव है। क्योंकि इसके द्वारा औद्योगिक उत्पादनों की मांग और आपूर्ति सुनिश्चित होती है। इस विश्लेषण से यह परिकल्पना पुष्ट होती है कि क्षेत्रीय अभिगम्यता के उच्च स्तर से मार्ग संगम केन्द्रों की केन्द्रियता बढ़ती है जिससे ग्रामीण औद्योगीकरण में वृद्धि होती है।

References

1. *Mishra, K.N. (2008): Agro Industry and Backward Area Development UBBP Vol. 38, March.*
2. *Papola, T.S. (1982): Rural Industrialization in India. Approaches and Potential, Himalaya Publishing House.*
3. *Shahi, S. (1960) : Agro Industrial Relationship in Saryupar Plain. Ph.D. Thesis Submitted to Gorakhpur University, P.18.*
4. *Rao, V.L.S.P. (1979): Development Strategy for an Agricultural Region: A Case Study of Mujaffarnagar Districs, UBBP.8.*

5. *Singh, M.B. (1987): Industrial Development Pattern and Potential of Eastern Uttar Pradesh: Indus Publication, Varanasi.*
6. *पाठक, आशुतोष कुमार एवं घनश्याम पाठक (2007) : ग्रामीण औद्योगीकरण नियोजन, जनपद बलिया, (उ0प्र0) का प्रतीक अध्ययन उ0भा0भू0प0*
7. *आर्य, राजेश कुमार (1999) : मालवा पठारी प्रदेश में कृषि आधारित उद्योग एवं ग्रामीण विकास, गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्रस्तुत शोध ग्रन्थ।*
8. *फात्मा, खुर्शीद 2002 : मध्य प्रदेश में कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक अध्ययन गोरखपुर में प्रस्तुत शोध ग्रन्थ।*
9. *Mishra, K.N. (2008): Agro Industry and Backward Area Development U.B.B.P. Vol-38, No. March.*
10. *Popala T.S. (1982): Rural Industrialisation in India Approaches & Potentials, Himalaya Publication House.*
11. *Popola, T.S. (1980): Some Aspects of Rural Industrialisation Economic & Political Weekly Special Number October 1980, P.123, 146.*

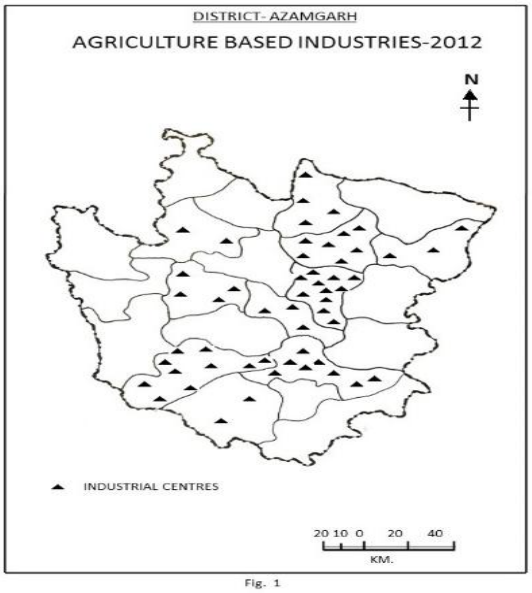

Fig. 1

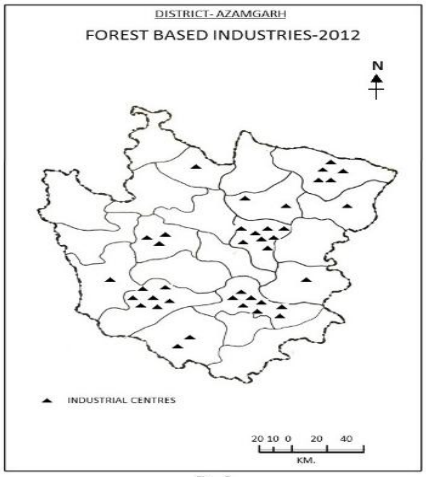

Fig. 2

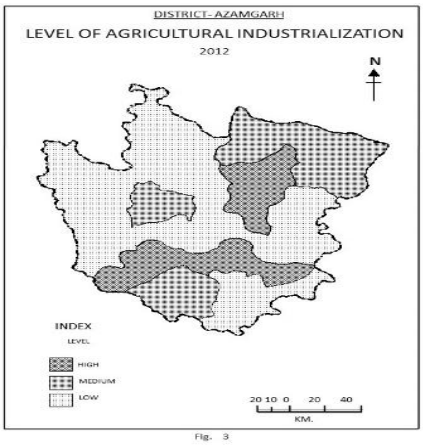

Fig. 3

Fig. 4

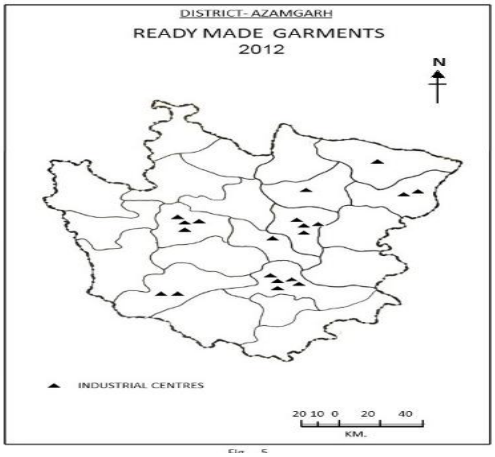

Fig. 5

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February (Part2) * 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

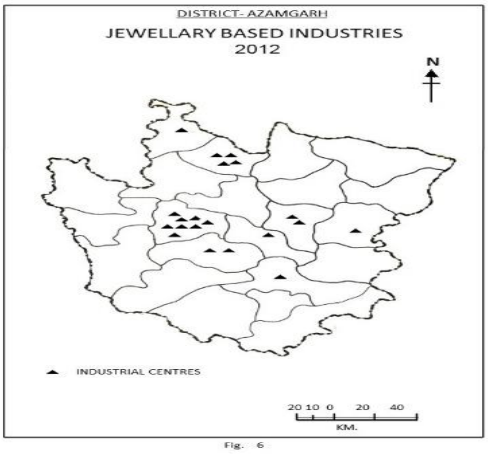

Fig. 6

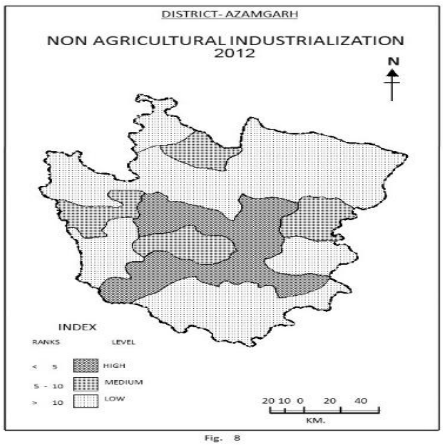

Fig. 8

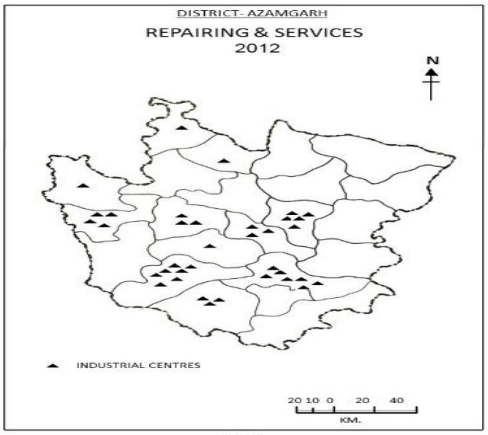

Fig. 7